अध्याय
23

गद्यांश एवं उनसे संबंधित प्रश्न-उत्तर (शीर्षक, भावार्थ, संक्षेपण एवं रेखांकित अंशों की व्याख्या)

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर प्रदेश (राज्य सेवा) परीक्षा के लिये निर्धारित किये गए नवीन पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए आयोग द्वारा विगत वर्षों में आयोजित की गई मुख्य परीक्षाओं (प्रवर/अवर/आर.ओ./ए.आर.ओ.) के सामान्य हिन्दी वाले भाग में गद्यांश से संबंधित शीर्षक, भावार्थ, संक्षेपण एवं रेखांकित अंशों की व्याख्या संबंधी प्रश्नों को चरणबद्ध रूप से हल करने का तरीका बताया गया है।

शीर्षक

यह मूल पाठ के केंद्रीय भाव से संबंधित होता है। यह मूल पाठ का अत्यंत महत्त्वपूर्ण शब्द या एक से अधिक शब्दों का समूह होता है। मूल पाठ के शीर्षक को परखने या अनुमान लगाने हेतु सबसे उपयुक्त तरीका यह होता है कि यदि हम दिये गए मूल पाठ को पढ़कर लगभग उसी प्रकार का अवतरण लिखने में सफल होते हैं तो समझो वही उपयुक्त शीर्षक है। इसी प्रकार यदि पाठ में शीर्षक से संबंधित एक से अधिक विकल्पों का अभाव हो तब आकलन कीजिये कि उनमें से कोई एक ऐसा होगा, जो सबसे बेहतर होगा तब यह समझो वही उचित शीर्षक है।

भावार्थ

गद्यांश का ऐसा विवरण या विवेचन, जिसमें उसका केवल मूल भाव या आशय समाहित हो, उसे भावार्थ समझा जाता है। भावार्थ की लंबाई-चौड़ाई की एक निश्चित या अंतिम सीमा नहीं निर्धारित की जा सकती। इसमें मूल गद्यांश के सभी प्रधान तथा गौण भाव शामिल होने चाहियें, साथ ही भाषा भी सरल होनी आवश्यक है।

संक्षेपण

किसी विस्तृत विवरण, वक्तव्य, व्याख्या, भाषण, पत्र, लेख आदि के सारगर्भित एवं संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण को संक्षेपण कहते हैं। डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद के अनुसार, ''किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार व्याख्या, वक्तव्य, पत्र-व्यवहार या लेख के तथ्यों और निर्देशों के ऐसे संयोजन को 'संक्षेपण' कहते हैं, जिसमें अप्रासंगिक, असंबद्ध, पुनरावृत्त तथा अनावश्यक बातों का त्याग और सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन हो।'' संक्षेपण में मूल संदर्भ के विचारों को इस प्रकार संक्षिप्त एवं क्रमबद्ध रूप में रखा जाता है कि उसमें मूल अवतरण के सभी विचार आ जाएँ। संक्षेपण को पढ़ लेने के बाद मूल अवतरण को पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। संक्षेपण में अनावश्यक शब्दों को हटा दिया जाता है। इसमें कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचारों, भावों तथा तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि संक्षेपण किसी बड़े ग्रंथ का संक्षिप्त संस्करण, बड़ी मूर्ति का लघु अंकन और बड़े चित्र का छोटा चित्रण है।

संक्षेपण की विशेषताएँ

- **पूर्णता–** संक्षेपण अपने आप में पूर्ण होना चाहिये। इसके मूल संदर्भ में सभी विचार आने चाहियें तथा मूल के अनुरूप ही विचारों की गंभीरता भी बनी रहनी चाहिये। संक्षेपण पढ़ने पर मूल अवतरण के सभी विचार एवं भाव स्पष्ट हो जाने चाहियें।
- **संक्षिप्तता–** संक्षेपण के मूल में उसकी संक्षिप्तता का गुण है। अनावश्यक शब्दों को छाँटकर तथा मुख्य विचारों को सामासिक शैली में सारगर्भित रूप में व्यक्त करना ही संक्षेपण की विशेषता है। सामान्यतः संक्षेपण मूल संदर्भ का एक-तिहाई हिस्सा/भाग होता है।
- **स्पष्टता–** संक्षेपण में अर्थ की स्पष्टता होनी चाहिये। संक्षेपण को पढ़ने से मूल अवतरण का आशय स्पष्ट हो जाना चाहिये।